ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 48 कुल पृष्ठ-8 3 से 9 फरवरी, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 मा.शु.-03

बसन्त पंचमी के अवसर पर विशेष

किसानों के रहनुमा दीन बन्धु चौधरी छोटूराम जी की प्रासंगिकता

– स्वामी आर्यवेश

परिवर्तिनी संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम।।

इस श्लोक का भावार्थ यह है कि इस परिवर्तनशील संसार में मर कर तो जन्म सभी लेते हैं परन्तु जन्म लेना उन्हीं का सार्थक है जिनके जन्म लेने से उनका वंश उन्नति को प्राप्त होता है। यह श्लोक दीनबन्धु चौधरी छोटूराम जी के जीवन का एक मूल मंत्र बन गया था जिससे उनके हृदय में किसान वर्ग को शिक्षा, सामाजिक सम्मान, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से समोन्नत करने की उत्कट अभिलाषा संकल्प के रूप में पैदा हुई और उन्होंने जीवन–पर्यन्त किसान हित के लिए कार्य करके अमरत्व को प्राप्त किया। चौ. छोटूराम एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने सामान्य किसान परिवार में जन्म लेकर अनेक विघ्न–बाधाओं को पार करते हुए अपने जमाने को नई दिशा देने का कार्य किया। 24 नवम्बर, 1881 को रोहतक जिले के गढ़ी, सांपला गांव के एक गरीब किसान चौ. सुखीराम के घर में उनका जन्म हुआ और बचपन आर्थिक विपन्नता में गुजरा। उन्होंने बचपन से ही गरीब किसान की व्यथा को देखा, बेबसी को भोगा, साहूकार के जुल्म को सहा और किसानों की लूट को समझा और तभी अपने हृदय में यह संकल्प संजो लिया कि एक दिन मुझे किसान, मजदूर, शोषित एवं पीड़ित जनता को साहूकारों के जुल्म से मुक्ति दिलानी है। उन्होंने जैसे–तैसे आठवीं तक की पढ़ाई की और 10वीं में दाखिले के लिए अपने गरीब पिता के पास खर्च न होने के कारण साहूकार से जमीन गिरवी रखकर कर्जा लिया। इसी प्रकार कालान्तर में सेठ छाजूराम के सहयोग से उन्होंने दिल्ली से बी.ए. तक की और उसके पश्चात् आगरा से एल.एल.बी. की परीक्षा पास की। उन्होंने अपना सार्वजनिक जीवन एक वकील के रूप में प्रारम्भ किया और गरीबों को न्याय दिलाने के लिए तत्कालीन वकीलों की सामन्ती सोच और लूट को चुनौती देकर उन्होंने संघर्ष किया। किसी भी गरीब के पास यदि फीस देने के लिए पैसा नहीं होता था तो चौधरी साहब बिना फीस लिये उसका मुकदमा लड़ते थे और उसका ढांढस बंधाते थे। लगभग 33 वर्ष तक वे सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रहे और अपना जीवन गरीब, किसान और देहात की बेहतरी के लिए समर्पित कर दिया। चौ. छोटूराम जी ने दीन, हीन, अपमानित, शोषित, पीड़ित, त्रस्त, किसान व मजदूर में स्वाभिमान की अलख जगाई। वे कहा करते थे –

'खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे कि बता तेरी रजा क्या है?

चौधरी साहब प्रखर लेखक एवं वक्ता थे। उन्होंने 'बेचारा जमींदार' शीर्षक से लेखमाला चलाकर किसानों को झकझोरते हुए आह्वान किया था 'ऐ किसान तू मेरी दो बात मान ले, बोलना ले सीख और दुश्मन पहचान ले। तू अपने स्वाभिमान को जगा, तेरे भीतर पहाड़ की मजबूती छिपी है, तूफान की तेजी वास करती है, बाढ़ की ताकत छिपी हुई है और नदी का वेग छुपा हुआ है, इसलिए तू जाग, उठ, आवाज बुलन्द कर, हुंकार भर, मैं तुझे बेचारा नहीं रहने दूँगा। चौ. छोटूराम ने तत्कालीन अखबारों द्वारा किसानों की जा रही अनदेखी को चुनौती देकर 1916 में उर्दू का 'जाट गजट' अखबार प्रारम्भ किया। 'जाट गजट' के माध्यम से उन्होंने किसानों के शोषण, सूदखोरी और अन्धविश्वासों पर कड़ा प्रहार किया और किसानों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करके भारतीय राजनीति में एक नया मोड़ ला दिया। किसानों को शोषण से मुक्ति दिलाने के अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए चौधरी साहब ने 1920 में हिन्दू, मुस्लिम, सिख आदि

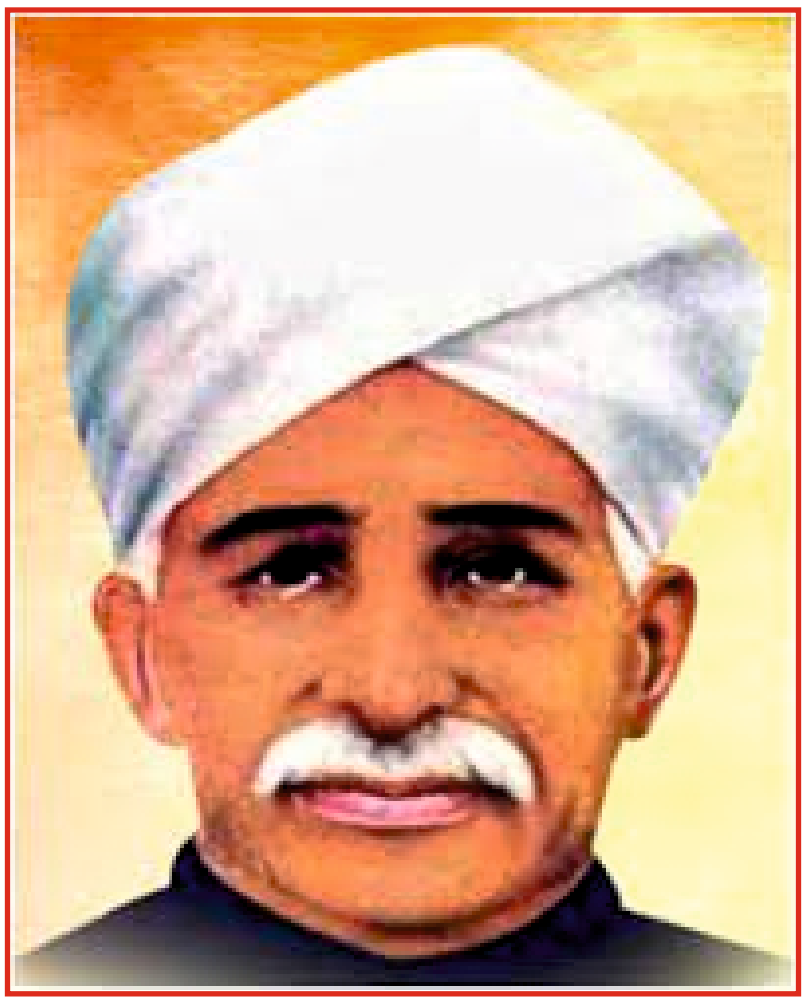

सभी किसानों को मिलाकर एक नई राजनीतिक पार्टी खड़ी की जिसका नाम 'यूनियनिस्ट' पार्टी रखा। उन्होंने नारा दिया था 'किसान–किसान सब एक हैं' चाहे वह कोई भी धर्म मानते हों, किसी जाति के हों। फसल, पानी, जमीन, खाद आदि किसी धर्म को नहीं पूछते। राजनीति में पूरी तरह सक्रिय होने के बाद चौधरी साहब संयुक्त पंजाब के पहले मंत्रिमण्डल में शामिल हुए और कृषि मंत्री के रूप में उन्होंने किसानों की उन्नति के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये जिनमें मण्डी जल विद्युत योजना को चालू करना, उद्योग धन्धे बढ़ाने और चालू उद्योग धन्धों को आगे बढ़ाने का निर्णय, भाखड़ा बाँध योजना को मूर्त रूप देने की योजना, देहातों में पशुओं एवं मनुष्यों के इलाज के लिए औषधालयों और डिस्पेंसरियों की संख्या बढ़ाना। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में किसानों एवं ग्रामीणों को अधिक अवसर दिलाने के लिए उन्होंने झज्जर, बहादुरगढ़ व अन्य स्थानों के स्कूलों को सरकार द्वारा अधिग्रहित करवाया। इंजीनियरिंग स्कूल व कॉलेजों में किसान छात्रों का प्रवेश निषिद्ध था उसके लिए 50 प्रतिशत स्थान सुरक्षित करवाये। कुल मिलाकर चौधरी साहब की दृष्टि किसानों एवं ग्रामीणों को विभिन्न क्षेत्रों में आगे लाकर आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से शक्तिशाली बनाने की थी। उन्होंने इस कार्य को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए पंजाब की एसेम्बली में कई क्रांतिकारी कानून पास कराये जिनसे किसानों की किश्मत ही बदल गई। मुख्य रूप से (1) साहूकार पंजीकरण कानून, (2) गिरवी जमीनों की मुफ्त वापसी कानून, (3) कृषि उत्पादन मण्डी कानून, (4) व्यवसाय श्रमिक कानून तथा (5) कर्जमाफी जैसे कानून उल्लेखनीय हैं। चौधरी छोटूराम ने एक तरफ किसानों के हितों के लिए कानून बनवाने का कार्य किया और दूसरी ओर उनमें चेतना जागृत करके अपने अधिकारों के लिए लड़ना सिखाया। उनके द्वारा की गई क्रांति खूनी क्रांति नहीं थी बल्कि विचारों तथा कानून के द्वारा समाज में परिवर्तन लाने की क्रांति थी।

चौधरी छोटूराम ने जिन महत्त्वपूर्ण कार्यों को अपने प्रभाव से सम्पन्न किया तथा सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में हलचल मचाई, उनमें निम्नलिखित कार्य मुख्य हैं :–

(1) पंजाब के सूखाग्रस्त दक्षिणी क्षेत्र को हरा–भरा करने के लिए उन्होंने भाखड़ा बाँध परियोजना को लागू करवाने के लिए जीवन के आखिरी श्वाँस तक प्रयत्न किया। वे इस परियोजना के जन्मदाता थे।

(2) समाज में बेटा और बेटी में भेद करने की मानसिकता को उन्होंने जबरदस्त चुनौती दी। उनकी सन्तान के रूप में दो बेटियाँ मात्र थीं जिनमें एक बेटी पूर्व केन्द्रीय इस्पात मंत्री चौ. वीरेन्द्र सिंह की माता थीं। चौ छोटूराम साहब के शुभचिन्तकों ने उनसे आग्रह किया कि आप पुत्र प्राप्ति के लिए दूसरी शादी कर लें। क्योंकि हमें चिन्ता है कि आपके बाद आपका राजनैतिक वारिश कौन बनेगा? चौधरी साहब ने उनके आग्रह को ठुकराते हुए कहा कि बेटा और बेटी में फर्क करना ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है और मैं आपलोगों के आग्रह को कतई स्वीकार नहीं करूँगा। जहाँ तक मेरे राजनीतिक उत्तराधिकारी का सवाल है, पूरे पंजाब के किसान व मजदूर ही मेरे राजनीतिक वारिश हैं। इससे चौधरी साहब ने बेटियों का सम्मान बढ़ाते हुए एक बहुत बड़ा संदेश पूरी जनता को दिया। वे लड़कियों की शिक्षा के भी पैरोकार थे।

(3) चौधरी साहब ने समाज की उन्नति के लिए शिक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना, क्योंकि उन्होंने स्वयं जिन विकट परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त की थी उससे उन्हें यह अनुभव हो गया था कि सामान्य ग्रामीण जनता जिस आर्थिक शोषण से पीड़ित है उस स्थिति

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

विश्व की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा पद्धति – गुरुकुल प्रणाली है

– सुखदेव व्यास

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति एक पूर्ण शिक्षा व्यवस्था है, गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अगर शिक्षा दी जाती है तो 24 वर्ष में ही शिक्षित युवा तैयार हो जाता है। प्राचीन युग में प्रत्येक गाँव में गुरुकुल हुआ करते थे, उसमें स्थानीय भाषा या संस्कृत में शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर अपने स्वार्थ के लिये अपनी अविकसित शिक्षा पद्धति लागू कर दी और यह कहते हैं कि भारतीयों के पास कोई शिक्षा पद्धति नहीं थी, अंग्रेजों के कारण ही भारतवासी शिक्षित हुए हैं। इसके विपरीत अंग्रेजों ने हमारी विकसित शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर अपनी प्रणाली लागू की।

सन् 1931 ई. में गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गाँधी लंदन गये थे। उस समय अंग्रेज अधिकारियों ने गाँधी जी से कहा था– यदि अंग्रेज भारत नहीं आते तो भारत की शिक्षा व्यवस्था बन नहीं पाती। गाँधीजी को यह बात सही नहीं लगी लेकिन उनके पास ऐसे तथ्य नहीं थे कि वे उसका जवाब देते। भारत आने पर उस समय के विख्यात इतिहासकार धर्मपाल जी से कहा था कि तुम भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में प्रमाण एकत्रित करो और उसके आधार पर बताओ कि भारत की शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों के आने के पूर्व कैसी थी।

गाँधी जी के कहने पर इतिहासकार धर्मपाल जी लंदन, फ्रान्स और जर्मनी आदि देशों और भारत में प्राचीन इतिहास की खोज करने में संलग्न हो गये और वे 40 वर्ष तक अध्ययन और अध्यापन करते रहे तथा अनेक दस्तावेज एकत्रित किये, उसका उन्होंने पूर्ण विश्लेषण किया और यह सिद्ध कर दिखाया कि– अंग्रेजों के आने से पूर्व भारत की शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही श्रेष्ठ थी। भारत के प्रत्येक परिवार में शत प्रतिशत साक्षरता थी और भारतीय जन अपने बच्चों को शिक्षित करने में अपना तन–मन–धन खर्च करते थे।

विलियम एडम मैकाले के गुरु थे, मैकाले भारत की शिक्षा पद्धति के विषय में जो खोज करते थे, उसे वे अपने गुरु विलियम एडम के पास भेजते थे। उसे आधार बनाकर विलियम एडम ने भारत की शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर 1750 पृष्ठों की रिपोर्ट तैयार की उस रिपोर्ट को ब्रिटिश संसद में पेश किया गया। 2 फरवरी सन् 1835 को ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में मैकाले ने भारतीय शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर भाषण दिया और सांसदों ने उनसे प्रश्न भी किये। उनका उत्तर भी मैकाले द्वारा दिया गया। ये सभी रिकार्ड रूप में अभी तक सुरक्षित है। मैकाले ने कहा था–

1. मैंने पूरा भारत देखा, लेकिन भारत देश में किसी भी स्थान पर भिखारी देखने को नहीं मिला, भारत इतना समृद्ध है।

2. सूरत शहर में जितनी सम्पत्ति है, उतनी यूरोप में सभी शहरों की सम्पत्ति भी नहीं है अर्थात् भारत का शहरी इलाका व्यापार धंधों में इतना समृद्ध था कि यहाँ किसी प्रकार की बेरोजगारी नहीं थी।

3. भारत में जितना भी धन वैभव सम्पत्ति है, वह भारत की शिक्षा व्यवस्था के कारण है। जिसका तात्पर्य है शिक्षा रोजगार परक और योग्यता पर आधारित होने के कारण यह समृद्धि थी।

4. भारत में लगभग शत प्रतिशत साक्षरता है। दक्षिण भारत में साक्षरता १०० प्रतिशत है। दक्षिण भारत अर्थात् कर्नाटक, तैलंगाना, तमिलनाडु शत प्रतिशत, उत्तर भारत में लगभग 82 प्रतिशत, मध्यभारत में 87 प्रतिशत साक्षरता है। मैं कह सकता हूँ सम्पूर्ण भारत साक्षर है अर्थात् यहाँ पर कोई अनपढ़ नहीं।

5. भारत में 7 लाख 32 हजार गाँव हैं जहाँ से रेवेन्यू प्राप्त होता है और कोई भी गाँव ऐसा नहीं है जहाँ गुरुकुल या स्कूल न हो। यहाँ स्कूलों को गुरुकुल कहा जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि इन गुरुकुलों में पढ़ाने वाले ब्राह्मण विद्वान् गुरु की योग्यता वाले थे।

6. गुरुकुलों में 200 से 20000 हजार तक छात्र पढ़ते हैं, जिसमें मोनिटोरियम शिक्षण पद्धति है, यही कारण है यहाँ से निकलने वाला छात्र सब विषयों में पारंगत होता था।

7. गुरुकुलों में विद्या और शिक्षा दोनों प्रदान की जाती है। नैतिकता, आध्यात्मिकता, न्याय आदि को सिखाना विद्या है, गणित, रसायन शास्त्र, विज्ञान आदि को सिखाना शिक्षा है। इससे यही लगता है मैकाले ने यहाँ की शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण अध्ययन किया था।

8. गुरुकुलों में 8 विषयों गणित, खगोलशास्त्र, धातु विज्ञान, इंजीनियरिंग, संगीत, रसायन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, भौतिक शास्त्र पढ़ाये जाते हैं। एक विषय पूर्ण होने पर दूसरा विषय पढ़ाया जाता है, इससे यह सिद्ध होता है कि गुरुकुल से निकलने वाला छात्र विद्वान् होकर ही निकलता है।

9. भारत में विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा होती थी। ऐसे गुरुकुलों की संख्या 15800 सन् 1835 तक थी। ब्रिटेन के तत्कालीन शिक्षा मंत्री ने मैक्समूलर की रिपोर्ट के बाद स्वीकार किया कि भारत पूर्ण शिक्षित देश है। भारत में तब 7 लाख 32 हजार से भी अधिक स्कूल थे इसके विपरीत ब्रिटेन में मात्र 240 स्कूल थे।

गाँवों के गुरुकुलों के साथ ही लड़कियों को पढ़ाने के लिए अलग गुरुकुल थे। सह शिक्षा का चलन नहीं था। लड़कियों के स्कूल में लड़कियाँ, महिलायें ही शिक्षा देती थीं। गुरुकुल भी लड़के–लड़कियों के दूरस्थ रहते थे। जहाँ पर पुरुषों के जाने पर प्रतिबन्ध रहता था और लड़कों के गुरुकुलों में महिलायें प्रतिबन्धित रहती थीं। मैकाले ने ब्रिटिश संसद में कहा था कि भारत को यदि गुलाम बनाना है तो उसकी शिक्षा पद्धति को ध्वस्त किया जावे। इसी आधार पर ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा अधिनियम द्वारा स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने को गैरकानूनी तथा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पद्धति लागू कर दी।

अब हमारा देश स्वतंत्र है और ७० साल हो चुके हैं। फिर भी हम अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दे रहे हैं। हम भारत की स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने के बजाय अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देकर देश में बेरोजगारी में वृद्धि कर रहे हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही समृद्ध थी और 100 प्रतिशत साक्षरता थी। यह हमारा दुर्भाग्य था कि 100 प्रतिशत साक्षरता देश की थी उसे 17 प्रतिशत साक्षर अंग्रेज ध्वस्त कर चले गये। जब हमारे देश में भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने की व्यवस्था थी तब हमारा देश विकसित था और आज हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ कर विकासशील देश की श्रेणी में ही चल रहा है, आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे देश की जनता पुनः प्राचीन शिक्षा पद्धति की ओर लौटे और अपने स्तर पर 7 लाख 32 हजार गाँवों में अपने–अपने गुरुकुल चलाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर देश के विकास में अपना योगदान देवे।

– अनन्त सुन्दरम् भवन, जहाज गली उज्जैन(म.प्र.)

हर घर में रखने योग्य श्रेष्ठ पुस्तक

'चिकित्सा भास्कर'

लेखक – मधुर शास्त्री

चरक संहिता के अनुसार रोग एवं उनकी चिकित्सा – रोगों का निदान, अनेक अनुभवी संन्यासी, महात्मा तथा जन साधारण के अनुभव के आधार पर गुप्त रोगों पर किए गए प्रयोग, निर्धन, धनी व्यक्तियों के लिए शास्त्र प्रमाण अनुभव द्वारा पुष्ट, आयुर्वेद चिकित्सा का प्रामाणिक एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। अतः सभी ग्राहकों के हित में निवेदन है कि वे उपरोक्त पुस्तक को खरीदने के लिए प्रकाशक से सीधा सम्पर्क करें।

मूल्य 200/– रुपये, डाक व्यय निःशुल्क।

प्राप्ति स्थान – मधुर प्रकाशन

2804, बाजार सीताराम, दिल्ली–110006

– मधुर शास्त्री, मो.:–9810431857

संस्कार एवं शिव संकल्प से ही राष्ट्रोन्नति

– आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री

शिक्षा उसे कहते हैं जिससे मानव कुछ सीख कर वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा विश्वराष्ट्रीय प्रगति कर इस संसार को स्वर्गीय रूप प्रदान कर सके। वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ गर्भाधान संस्कार से होता है। वीर अभिमन्यु ने माता के पेट में रहकर, अर्जुन से सुनकर चक्रव्यूह में घुसने का तरीका सीखा था। अष्टावक्र ऋषि ने गर्भावस्था में वेदान्त की शिक्षा ग्रहण की थी। माता मदालसा की आठों सन्तानें गर्भावस्था में ही 'शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि संसारमाया परिवर्जितोऽसि' इस लोरी को सुनकर ब्रह्मर्षि बनी थी।

यज्ञोपवीत संस्कार के द्वारा बालक को शिक्षा दी जाती है - हे बालक तुम ऋषि ऋण, देव ऋण तथा मातृपितृ ऋण से ऋणी हो। वेदादि ग्रन्थ का पाठ तथा आचरण के द्वारा ऋषिऋण और अग्निहोत्र, अतिथि यज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ आदि द्वारा देवऋण से एवं जीवित माता-पिता और पितरों की सेवा सत्कार करके पितृ ऋणि से उऋण होने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

मानव कृति शुद्ध चैतन्य कृति है। इस शुद्ध चैतन्य कृति को अच्छे व सच्चे स्वरूप से सुस्थिर रखने के लिए मनीषियों ने संस्कार का निर्माण किया। इस उपादेयता को 'संस्कार विधि' के रूप में प्रस्तुत करके महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार के समक्ष बड़ा उपयोगी व अनिवार्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। शुद्र से वैश्य, क्षत्रिय व ब्राह्मण बनने का यह राज मार्ग है। आइये 'संस्कार' शब्द का अर्थ जानने के लिए आज हम इस शब्द का चिन्तन करेंगे। संस्कार शब्द सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से बनता है। जिसका अर्थ है - संस्क्रियते अलंक्रियते अनेन इति संस्कार' अर्थात जिससे शरीर, मन और आत्मा अलंकृत परिष्कृत होते हैं, श्रेष्ठ व उत्तम बनते हैं उसे संस्कार कहते हैं। संस्कार करने से शरीर व आत्मा सुसंस्कृत होते हैं वे पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति करते हैं। मनुष्य जो कर्म करता है उसका सर्वप्रथम प्रभाव आत्मा व मन पर पड़ता है। कर्म आत्मा व मन पर अपना संस्कार अंकित करके समाप्त हो जाता है। यह अंकन सूक्ष्म रूप में होता है। ये संस्कार जन्म जन्मान्तरों तक चलते हैं। शुभ अशुभ कर्मों के संस्कार प्रत्येक जीव अपने साथ ले जाकर नये जन्म को प्राप्त करता है। मोक्ष प्राप्त न होने तक यह क्रम चलता रहता है।

शास्त्रों में आया है - जन्मना जायते शूद्र संस्काराद् द्विज उच्यते अर्थात् - हम सब जन्म से शूद्र उत्पन्न होते हैं परन्तु संस्कारों के माध्यम से धीरे-धीरे हम द्विज, क्षत्रिय, वैश्य बन सकते हैं। संस्कारों से क्या लाभ है। जैसे बिना छौंक के दाल या सब्जी हमें बकबके स्वाद वाली प्रतीत होती है व हम खाना भी पसन्द नहीं करते परन्तु जब उसी का संस्कार कर दिया जाता है तो हम भूख से अधिक खा जाते हैं। मैला कपड़ा कोई पहनना पसन्द नहीं करता है। परन्तु उजला व साफ शुद्ध वस्त्र पहनकर हम फूले नहीं समाते हैं। भौतिक पदार्थों के संस्कार करने के ये लाभ हैं तो चेतन जगत अर्थात् आत्मा का उत्थान संस्कारित करना लाभदायक क्यों न होगा? यदि हम यह चाहते हैं तो हमें सर्वप्रथम संस्कारवान बनना होगा तभी हम अपनी योग्य संतानों को संस्कारित कर सकते हैं। यदि हम चाहते हैं कि संसार में सुख शान्ति हो आदर्शों व नैतिकता की स्थापना हो तो इसके लिए हमें अपने कर्मों को सुधारना होगा, क्योंकि कर्म से अधिक महत्वपूर्ण है उसको करने का विचार या संस्कार। संस्कार वीजवत होते हैं। बीज अनुकूल धरती जल, वायु व खाद पाकर एक बड़ा पेड़ बन जाता है व फल देता है। इसी प्रकार संस्कार भी आरम्भिक चीज है। जिन्हें आज के वैज्ञानिक युग ने महत्वहीन कर दिया गया है। परिणाम आपके सामने है। समस्त संसार में राजनैतिक सामाजिक, शैक्षणिक, पारिवारिक, शारीरिक एवं भावनात्मक एकता दुर्लभ है। परस्पर प्रेम व विश्वास का नितान्त अभाव है। स्वार्थ व छीना झपटी का चहुदिशि साम्राज्य है। भले ही हमने भौतिक उन्नति प्रापत कर ली है परन्तु स्थिति यह है कि -

इस दौर ए तरक्की के अन्दाज निराले हैं।
दिमागों में अन्धेरे हैं सड़कों पर उजाले हैं।।

इस दुनिया की चकाचौंध के आधुनिक काल में भौतिक उन्नति को श्रेष्ठ मानकर हम अपनी आत्मा पर कुठाराघात लगातार कर रहे हैं। आज हम देखते हैं कि हमारे पास सब कुछ होते हुए भी अपने आपको अकेला महसूस करते हैं। हमारा मन अशान्त है, आखिर क्यों? क्योंकि हमारे और हमारे बच्चों के संस्कार उत्तम नहीं हैं। आइये हम अपने आत्मा को उन्नत बनाने के लिए सुसंकल्पों पर चिन्तन करेंगे।

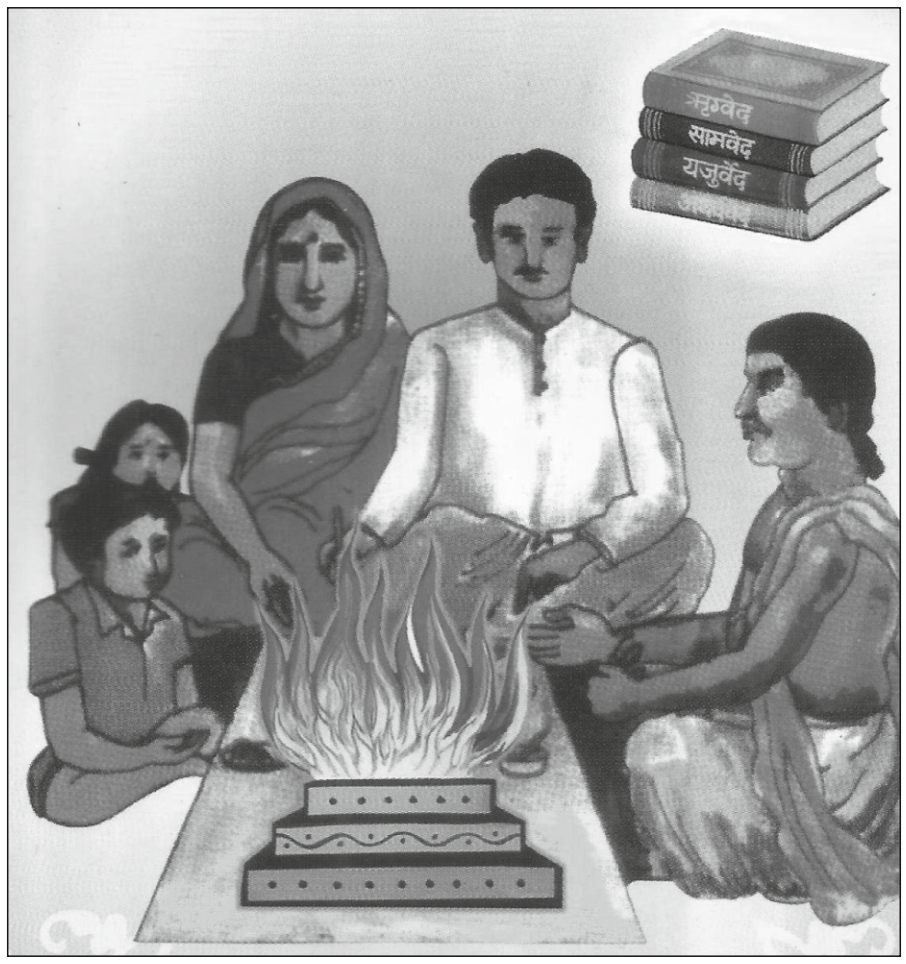

1. प्रेम तथा माधुर्य - प्रेम मानवता की पहली सुगन्ध है। प्रेम जगत का सार है। जो पृथिवी को स्वर्ग में बदल सकता है। प्रेम वह सुनहरी कुन्जी है, जो मानवता के हृदय को खोलती है। यजुर्वेद में मार्हिभूर्मा पृदाकुः 16/12 अर्थात् हे मानव तू सर्प और भेड़िया मत बन आदि सुन्दर उपदेश दिया है।

2. विद्या : - विद्या को कामधेनु कहा गया है। विद्या की प्राप्ति के लिए ईश्वर, जीव, प्रकृति के स्वरूप को जानना आवश्यक है। विद्या दो प्रकार की होती है (1) भौतिक विद्या (2) अध्यात्म विद्या। अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते यजुर्वेद 40/14 अर्थात् भौतिक विद्या से सांसारिक दुःख दूर होते हैं और अध्यात्म विद्या से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

3. शिव संकल्प :- बच्चों! हमें अपने जीवन उन्नति के लिए और संस्कारित करने के लिए शिव संकल्प (सुविचार) धारण करने होंगे। हमारे जीवन पर विचारों का गहरा प्रभाव पड़ता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है -

गिरते हैं जब खयाल तो गिरता है आदमी।
जिसने इन्हें संभाल लिया वह संभल गया।।

मनुष्य जैसा सोचता है वैसा बन जाता है। एक बार अमेरिका के माध्यमिक विद्यालय के एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों को राष्ट्रपति भवन दिखाने ले गए। जब बच्चे बाहर आये तो भवन के सम्बन्ध में अपनी-अपनी सम्मति लिखने के लिए बच्चों के सामने एक रजिस्टर रखा गया। एक बच्चे ने लिखा मैं अपने भावी भवन को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। इस बालक का नाम रूजवेल्ट था जो आगे चलकर अमेरिका का राष्ट्रपति बना। आप भी अपने विचारों को महान बनाइए। किसी ने लिखा है Bad thoughts are worse enemies the lions and tigers हम अच्छे विचार के लिए धार्मिक व श्रेष्ठ साहित्य का अध्ययन करें। इसलिए वेद से प्रार्थना की गई है - मे मनः शिवसंकल्पमस्त। अर्थात् मेरा मन शुभ उत्तम संकल्पों वाला हो।

सत्संग : सत्संग उसे कहते हैं जिससे मनुष्य सद् पुरुषों के साथ बैठकर सद्विचार और सत्कर्म करता है। इससे विद्या में शुचिता आती है और मनुष्य का अभिमान दूर होता है। सत्संग द्वारा ज्ञान कर्म में बदला जाता है।

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचित्सत्यं।
भानोन्नति दिशति पापमपाकरोति।।
चेतः प्रसायति दिक्षु तनोति कीर्ति।
सत्संगति कथय किमून करोति पुंसाम।।

भर्तहरि

अर्थात् सज्जनों की संगति बुद्धि की जड़ता को हर लेती है। वाणी को सत्य से सींचती है, सम्मान को बनाती है। पाप को दूर करती है। चित्त को प्रसन्न रखती है, यश, कीर्ति को दिशाओं में फैलाती है। कहो! यह मनुष्य के लिए क्या नहीं करती? जानता सं गमे महि। ऋग्वेद 5/5/15 अर्थात् हम ज्ञानी लोगों का सत्संग करें। एक युवक थे मुंशीराम। कुसंग के कारण शराब आदि बुरे व्यसन की लत पड़ गई। महर्षि दयानन्द का थोड़ा सा सत्संग मिला तो मुंशीराम की काया पलट गई। आगे चलकर ये स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए, यह सत्संग का प्रभाव है।

चरित्र निर्माण - चरित्र मानव जीवन की अमूल्य सम्पत्ति है। ठीक कहा है - चरित्र है मूल्य जीवन का चरित्रवान व्यक्ति प्रत्येक स्थान पर आदर और सम्मान पाता है। एक बार स्वामी विवेकानन्द अमेरिका के शिकागो के किसी मार्ग पर भ्रमण कर रहे थे, चलते-चलते उन्होंने अपने पीछे चलने वाले दम्पत्ति को अपने वस्त्रों के सम्बन्ध में यूं कहते सुना Look at this gentleman स्वामी जी समझ गए कि अमेरिका निवासी मेरी भारतीय वेशभूषा को हीन दृष्टि से देखकर इसका मजाक उड़ा रहा है। अतः वे रूके और उस महिला को सम्बोधित करते हुए बोले, प्रिय बहन! इन कपड़ों को देखकर आश्चर्य मत करो, देखो इस देश के पुरुषों को तो कपड़े ही सज्जन बनाते हैं। परन्तु जिस देश का मैं निवासी हूँ, वहाँ चरित्र ही मनुष्य को सज्जन बनाता है। इस बात को सुनकर वह दम्पत्ति विवेकानन्द जी के चरणों में झुक गए। यह है चरित्र का प्रभाव।

मैं अन्त में यही लिखना चाहूँगा कि पाठकवृन्द अपनी आध्यात्मिक, सामाजिक व राष्ट्रोन्नति के लिए स्वाध्याय तथा आत्ममंथन करें। आप पास के किसी आर्य समाज मन्दिर या धार्मिक संस्था में जाकर अच्छे सत्संग का लाभ उठा सकते हैं। किसी विद्वान या सज्जन को बुलाकर सत्संग का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि सत्संग से विचारों का परिवर्तन होता है और विचारों का प्रभाव मन, आत्मा पर पड़ता है। यही विचार हमारे व्यवहार का अंग बन जाते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 11 से 13 फरवरी, 2022 तक
वेबिनॉर के माध्यम से आयोजित किया गया है

RIG VEDA — INVITATION — YAJUR VEDA

KENDRIYA ARYA YUVAK PARISHAD, NEW DELHI (Regd)
(ESTD. 3 JUNE 1978)
ON THE OCCASION OF ITS 44th ANNUAL FUNCTION

INTERNATIONAL ARYA MAHA-WEBINAR

DATE:- 11, 12 & 13 FEBRUARY 2022
(FRIDAY, SATURDAY & SUNDAY)
ENLIGHTENING SESSIONS AND LECTURES BY SCHOLARS AND DIGNITARIES OF ARYA SAMAJ

(Live Telecast on Zoom & Facebook) LIVE Facebook Live

YOU ALL ARE CORDIALLY INVITED TO THIS VEDIC EVENT

WWW.ARYAYUVAKPARISHAD.COM
ARYAYOUTHGROUPS@FBGROUPS
ARYA YUVAK PARISHAD
ARYAYOUTH@GMAIL.COM
@AnilAry32599939
@ARYAYUVAKFB
YUVA UDGHOSH
DKBHAGAT@GMAIL.COM

KAYP WELCOMES PARTICIPANTS FROM 15 COUNTRIES
INDIA, NEPAL, BANGLADESH, PAKISTAN, MAURITIUS, AUSTRALIA, AMERICA, KENYA, CANADA, SPAIN, NETHERLANDS, HOLLAND, SOUTH AFRICA, UGANDA, THAILAND

SAMA VEDA — ANIL ARYA:- 9810117464 — ATHARVA VEDA

FRIDAY, 11th FEBRUARY 2022
SARVA KALYAN YAGYA
09:00 AM TO 10:00 AM (IST)

YAGYA BRAHMA:- ACHARYA AKHILESHWAR JI (HARIDWAR)

INTERNATIONAL ARYA WOMEN CONFERENCE
TOPIC:- WOMEN AND THEIR CONTRIBUTION IN ARYA SAMAJ

11:30 AM TO 2:00 PM (IST)

CHAIRPERSON — PREM HANS (ARYA SAMAJ, AUSTRALIA)

CHIEF GUEST — BINDU KHATTER (ARYA SAMAJ, AUSTRALIA)

CHIEF GUEST — DR. ANJU MEHROTRA (KALKA GROUPS OF INSTITUTIONS)

SPECIAL GUEST — DR. RACHNA CHAWLA (VEDIC SCHOLAR)

GUEST OF HONOUR — ARYA WATTEE BOOLAUKY (D.D DAV COLLEGE, MAURITIUS)

CONVENOR — URMILA ARYA (STATE PRESIDENT, ARYA YUVTI PARISHAD)

SPEAKER — AYUSHI RANA (VEDIC SCHOLAR)

SPEAKER — VIMLESH BANSAL (DARSHNACHARYA)

(DISTINGUISHED GUESTS)

SHRUTI SETIA, KAMLESH HASIJA, RAJNI GARG, GYATRI MEENA, CHANDRA PRABHA ARORA, ARCHANA PUSHKARNA, RAJNI CHUGH, CHANDERKANTA ARYA, SUNITA RASOTRA, SUMAN GUPTA, VINITA KHANNA, KARUNA CHANDNA, VEDPRABHA BAREJA, USHA AHUJA, SHAKUNTLA NAGIA

SWAR SANGEET :- SANGEETA ARYA 'GEET' & PUSHPA CHUGH

FRIDAY, 11TH FEBRUARY 2022
ARYA MITRA MILAN SAMMELAN
04:00 PM TO 6:30PM (IST)

CHIEF GUEST — AJAY SEHGAL (C.E.O. PARYAGRAJ CANTT.)

CHAIRPERSON — SATYA BHUSHAN ARYA (DISTRICT COURT JUDGE, SAMASTIPUR)

PRESIDED BY: — NARENDER AHUJA 'VIVEK' (CHANDIGARH)

SPECIAL GUEST — ACHARYA NARDEV YAJURVEDI (ARYA SAMAJ, NETHERLANDS)

VOTE OF THANKS — YASHOVIR ARYA

WELCOME SPEECH — ACH. MAHENDER BHAI

ENCOURAGEMENT — DHARAMPAL ARYA

SPECIAL GUEST — ANIL MITRA

DISTINGUISHED SPEAKERS

RAM KUMAR SINGH, SUBHASH BABBAR, HARICHAND SANEHI, JITENDER SINGH ARYA, RAMKRISHAN SHASTRI, SAWTANTRA KUKREJA, SHANKER DEV ARYA, VEDPARKASH ARYA, MITRA MAHESH ARYA, GOVIND SINGH BHANDARI, SHAILESH MUNI, PRAKASH VEER SHASTRI, RAKESH BHATNAGAR, VARUN ARYA, DEVENDER GUPTA, ASHOK ARYA PANCHKULA, VIJAY ARYA, MOHALI
SURYADEV YOGACHARYA, SANTOSH SHASTRI, K.K. YADAV, YOGENDRA SHASTRI, ANAND PARKASH ARYA, ARUN ARYA, DELHI, HARSHDEV SHARMA, KRISHAN DEV KAUTILYA, BHANU PRATAP VEDALANKAR, DR. SUDHIR GUPTA, YASH PRIYA ARYA, MUMBAI, ACH CHANDER SHEKHAR SHARMA, DINESH SINGH ARYA, ARUN ARYA (JAMMU), HARIOM SHASTRI, RAJENDER BEDI, USA, SUDHIR KAPOOR
YOGIRAJ VISHWAPAL JAYANT, DURGESH ARYA, SURESH ARYA, VIRENDRA AHUJA, ISH KUMAR ARYA, MAKENDRA KUMAR, YAGVEER CHAUHAN, OMVIR SINGH, VIKAS GOGIA, NAND KISHORE PASWAN, CHINKY ARYA, DEVENDRA ARYA, CAPT. ASHOK GULATI, GOPAL SHARMA, KASHI RAM RAJAK, K.L. RANA, MUKESH ABROL

INTERNATIONAL ARYA MAHA-WEBINAR — KENDRIYA ARYA YUVAK PARISHAD — 11 TO 13 FEBRUARY 2022

SATURDAY, 12th FEBRUARY 2022
SARVA KALYAN YAGYA
09:00 AM TO 10:00 AM (IST)

YAGYA BRAHMA:- ACHARYA AKHILESHWAR JI (HARIDWAR)

MAHARISHI DAYANAND JANMOTSAV
TOPIC:- MAHARISH DAYANAND VYAKTITVA AND KRITITATVA

11:30 AM TO 2:00 PM (IST)

KEYNOTE SPEAKER — SWAMI ARYAVESH JEE (PRADHAN, SARVDESHIK SABHA)

SPEAKER — DR. BALBIR ACHARYA (ARYA SAMAJ, AMERICA)

CHIEF GUEST — CHANDRABHAN ARYA (ARYA SAMAJ, AMERICA)

SPECIAL GUEST — DR. AMARJEET SHASTRI (NEW YORK)

SPECIAL GUEST — DR. RAJNI TELOR (PRESIDENT, HINDU COUNCIL, SOUTH AFRICA)

SPECIAL GUEST — KARMVIR SOOD (CMD, SUPREME CIRCUITS, INDIA)

SPEAKER — DR. SUSHMA ARYA (DELHI, INDIA)

SPECIAL GUEST — RAJAN RAKHEJA (DIRECTOR, PRECISIONTECH ENTERPRISES, INDIA)

VOTE OF THANKS — DURGESH ARYA (RASHTRIYA MANTRI, KAYP, INDIA)

BLESSINGS — YOGI VISHWA KETU (YOG GURU, CANADA)

BLESSINGS — SUSHIL ARYA (DELHI, INDIA)

BLESSINGS — DR. GAJRAJ SINGH (FARIDABAD, INDIA)

SATURDAY, 12th FEBRUARY 2022
YUVA MAHOTSAV
04:00 PM TO 6:30 PM (IST)

TOPIC:- ARYA SAMAJ AUR YUVA SHAKTI

(DISTINGUISHED GUESTS)

CHAIRPERSON — VISHWA MOHAN ARYA (ARYA SAMAJ, DUBAI)

CHIEF GUEST — VIMAL CHADHA (NAIROBI, KENYA)

SPEAKER — UPENDRA ARYA (YOGACHARYA, SPAIN)

SPEAKER — DR. RAMDEV PANDIT (ARYA SAMAJ, NEPAL)

SPECIAL GUEST — PANDIT NANAK CHAND SHANAND (ARYA SAMAJ, SOUTH AFRICA)

(DISTINGUISHED SPEAKERS)

ARNAV ARYA (BANGLADESH)

PRASHASTI RASTOGI (DELHI, INDIA)

NITASHA KUMAR (BANGALORE, INDIA)

AASTHA ARYA (FOUNDER, ETALC™ INDIA)

YOGIRAJ VISHWAPAL JAYANT (FOUNDER GURUKUL KANVE ASHRAM, KOTDWAR, INDIA)

VIJAYBHUSHAN ARYA (EX. PRESIDENT KAYP, INDIA)

OM SAPRA (EX. METROPOLITAN MAGISTRATE, INDIA)

DEEPTI SAPRA (CONVENOR)

SUNDAY, 13th FEBRUARY 2022
SARVA KALYAN YAGYA
09:00 AM TO 10:00 AM (IST)

YAGYA BRAHMA:- ACHARYA GAVENDER SHASTRI JI (DELHI)

INTERNATIONAL ARYA CONFERENCE
ROLE OF ARYA SAMAJ IN PRESENT TIMES

11:30 AM TO 2:00 PM (IST)

CHAIRPERSON — DR. ASHOK K CHAUHAN (FOUNDER PRESIDENT, AMITY EDUCATIONAL GROUP)

CHIEF GUEST — BHUVNESH KHOSLA (PRESIDENT, ARYA PRATINIDHI SABHA, AMERICA)

KEYNOTE SPEAKER — VISHNU MITRA VEDARTHI (VEDIC SCHOLAR, INDIA)

SPECIAL GUEST — KULDEEP RAI OBERIO (PRESIDENT, ARYA SAMAJ, UGANDA)

BLESSINGS — ANAND CHAUHAN (DIRECTOR, AMITY EDUCATIONAL GROUP)

RAMCHANDRA ARYA (PRESIDENT, VEDIK DHARM SANSTHA, PAKISTAN)

DR. MADHAV PRASAD UPADHYAY (PRESIDENT, NEPAL ARYA SAMAJ)

HARRYDEV RAMDHONI (VICE PRESIDENT, ARYA SAMAJ, MAURITIUS)

PREM PRAKASH SHARMA (SECRETARY, TAPOVAN ASHRAM, DEHRADUN)

THAKUR VIKRAM SINGH (FOUNDER, RASHTRA NIRMAN PARTY)

ARUN BANSAL (CHAIRMAN, BANSAL WIRE)

SANJEEV SETHI (CHAIRMAN, FRONTIER BISCUITS)

S.P. SINGH (EX. PRESIDENT, ARYA SAMAJ, BAHOK)

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम है।

75 भारत अमृत महोत्सव — हर राह पर बढ़ते कदम

AZADI KA AMRIT MAHOTSAV
04:00 PM TO 6:30 PM (IST)

SWATANTRATA ANDOLAN MAI ARYA SAMAJ KA YOGDAN

CHAIRPERSON — DR. ASHISH KHURANA (KHURANA HOSPITAL AND IVF CENTRE, SIRSA)

SPECIAL GUEST — DR. SUBHASH SHARMA (AUSTRALIA)

GUEST OF HONOUR — ACHARYA SUBHASH SHASTRI (PRESIDENT, ARYA SAMAJ BANGLADESH)

KEYNOTE SPEAKER — ARYA RAVI DEV GUPTA (DELHI, INDIA)

SPECIAL GUEST — SURYA PRASAD BIERE (NETHERLANDS)

SWAR SANGEET:- NARENDER ARYA SUMAN, PINKY ARYA, NARESH KHANNA
BLESSINGS:- R.P. SURI, RAJESH MEHENDIRATTA, DR. VIPIN KHERA, D.P. PARMAR

KAYP MEDIA TEAM

PRAVEEN ARYA 9716950820

DEVENDRA BHAGAT 9958889970

ARUN ARYA 9818530543

SAURABH ARYA 9813739000

MADHAV SINGH ARYA 7011641769

DONATE & CONTRIBUTE TO KAYP FOR NOBLE CAUSE
KENDRIYA ARYA YUVAK PARISHAD
ACCOUNT NO: 10205148690
STATE BANK OF INDIA, CLOCK TOWER, DELHI - 110007
IFSC CODE - SBIN0001280
YOU MAY ALSO DONATE via Paytm, Google Pay , Phone Pay on 9958889970
SUBSCRIBE TO OUR QUARTERLY JOURNAL 'YUVA UDGHOSH' (ESTD. 1982)

आर्य समाज महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर के तत्वावधान में 29 जनवरी, 2022 को अमृतसर में जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरण किया गया

गरीबों की सेवा तथा मदद करना ही मानवता का परम धर्म है – ओम प्रकाश आर्य

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर के तत्वावधान में दिनांक 29 जनवरी, 2022 को आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता में जरूरतमंद परिवारों के लिए राशन वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि स. इन्द्रबीर सिंह बुलारिया, डॉ. संजीव अरोड़ा सदस्य इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट, बिल्ला आरे वाले, श्री इन्द्रपाल आर्य, प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, श्री विजय सर्राफ प्रधान गोल्ड एण्ड सिल्वर एसोसियेशन, डॉ. नवीन आर्य निदेशक आयुर्वेदा ओमाश्रय, प्रिं. रजनी शर्मा, कृष्ण कन्या स्कूल ने विशेष रूप से उपस्थित होकर जरूरतमंद परिवारों को राशन वितरित किया।

इस अवसर पर स. इन्द्रबीर सिंह बुलारिया जी ने कहा कि मानवता की सेवा करना हमने अपने पूर्वजों से सीखा है। हर व्यक्ति अपना धर्म समझते हुए जरूरतमंदों की सेवा करें तो समाज के अन्दर भाईचारा व समानता होनी आरम्भ हो जायेगी। वर्तमान समय में गरीबों की मदद करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। लगभग दो वर्ष से कोरोना महामारी ने देश के गरीबों की कमर तोड़ कर रख दिया है। इसलिए हम सबको मिलकर इनके भरण–पोषण तथा गरीब बच्चों की शिक्षा–दीक्षा हेतु सहयोग करना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य जी ने कहा कि दूसरों के सुख–दुःख में अपना सुख–दुःख समझना ही मानवता है। गरीब, बेसहारा, जरूरतमंदों की सेवा ही परमात्मा की पूजा है। वर्तमान समय में कोरोना जैसी भयंकर महामारी के कारण देश के तमाम परिवारों को काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे समय में हम सबकी और अधिक जिम्मेदारी बन जाती है कि गरीब, मजदूर, बेसहारा, पीड़ित एवं शोषित लोगों की बढ़–चढ़कर मदद करें तथा उनकी सेवा करें। सेवा के कार्य करने से मन को संतोष भी मिलता है तथा आपस में प्रेम व सद्भाव भी बढ़ता है।

राशन वितरण समारोह के अवसर पर जिन महानुभावों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया उनमें श्री अर्जुन कुमार, श्री अशोक वर्मा, आचार्य दयानन्द शास्त्री, श्री राकेश आर्य, सुश्री सुलोचना आर्या, सुश्री सुनीता, श्री नरेश पसाहन, सुश्री नीलम, श्री पंकज, श्री अश्विनी अग्रवाल, श्री कुणाल, श्री प्रदीप सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान पर संगोष्ठी सम्पन्न

स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास आर्य समाज के बिना अधूरा है – डॉ. राकेश कुमार आर्य

आर्य समाजी होने का अर्थ ही देशभक्त होना है – अनिल आर्य

केंद्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में कोरोनाकाल में चल रही वेबिनरों की श्रृंखला में 29 जनवरी 2022 (शनिवार) को स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज के योगदान पर बैठक सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर मुक्ष्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. राकेश आर्य (सम्पादक, उगता भारत) ने कहा कि स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान अप्रतिम है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विरजानन्द, स्वामी पूर्णानन्द जैसे महान तपस्वी और वैदिक संस्कृति के प्रति निष्ठावान संन्यासियों ने 1857 की क्रांति की भूमिका तैयार की थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1857 की क्रांति में बढ़–चढ़ कर योगदान दिया था। उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, धन सिंह कोतवाल जैसे अनेकों क्रांतिकारियों को क्रांति के लिए तैयार किया था। उससे पहले स्वामी जी महाराज ने माउंट आबू से लेकर हरिद्वार तक की पैदल यात्रा की थी। जिसमें उन्होंने जन–जागरण का अभियान चलाया था। डॉ. आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द के ओजस्वी विचारों और बौद्धिक चातुर्य के कारण ही 1873 में चित्तौड़ अंग्रेजों के अधीन होने से बचाई जा सकी थी। 1875 में ऋषि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके लोगों को जागरूक करने के लिए प्रचार प्रसार को तेज किया। उन्होंने कहा कि आज आर्य समाज को अपने अतीत को समझ कर वर्तमान को संभालने की आवश्यकता है। जिसके चलते ही हम उज्जवल भविष्य की कामना कर सकते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि उस समय हर आर्य समाजी देश की आजादी के लिए सक्रिय भूमिका निभा रहा था इसलिए आर्य समाज का अर्थ ही देशभक्ति हो गया था। कोर्ट में भी सत्य का इतना प्रभाव था कि आर्य समाजी की गवाही को प्रामाणिक माना जाता था। आज वही तड़प, जज्बा पैदा करने की आवश्यकता है।

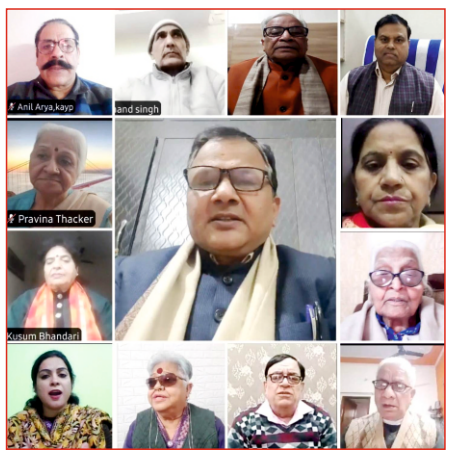

राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने भी कहा कि आर्य समाज से प्रेरणा लेकर अनेकों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े।

मुख्य अतिथि श्री आनन्द सिंह आर्य (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल) व आर्य समाज हापुड़ के संरक्षक श्री आनन्द प्रकाश आर्य जी ने भी आर्य समाज के योगदान की चर्चा की।

गायिका प्रवीना ठक्कर, दीप्ति सपरा, रविन्द्र गुप्ता, के. के. यादव, कुसुम भंडारी, सुमित्रा गुप्ता (90 वर्षीय), कमलेश चांदना, स्वतंत्र कुकरेजा आदि ने देशभक्ति के गीत सुनाये।

ओ३म्

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा

स्वामी दयानन्द सरस्वती के 198 वीं जन्मजयन्ती के शुभ अवसर पर

गुरुकुलीय-निबन्ध-प्रतिस्पर्धा का आयोजन

सौजन्य - आर्य समाज लांग आयलेंड न्यूयार्क-अमेरिका

प्रथमा-उत्तरमध्यमा श्रेणी

विषय - छात्र वर्ग - महर्षि दयानन्द सरस्वती का ध्येय, सुसंस्कारित समाज।
छात्रा वर्ग- भारत के निर्माण में गुरुकुलों का योगदान।

शब्द सीमा — अधिकतम - 2000 न्यूनतम - 1500

पुरस्कार- प्रथम पुरस्कार-2,100/- द्वितीय पुरस्कार-1,500/- तृतीय पुरस्कार-1,100/-

शास्त्री-आचार्य श्रेणी

विषय - छात्र वर्ग - महर्षि दयानन्द सरस्वती का दार्शनिक चिन्तन
छात्रा वर्ग - देशोत्थान में आर्य महिलाओं का योगदान

शब्द सीमा - अधिकतम 2500 न्यूनतम — 2000

पुरस्कार- प्रथम पुरस्कार-3,100/- द्वितीय पुरस्कार-2,100/- तृतीय पुरस्कार-1,100/-

दोनों वर्गों के लिए पृथक्—पृथक् रूप से 12 पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

निबन्ध-प्रेषण की अन्तिम तिथि - 20 फरवरी 2022 रात्रि 11:59 तक

निबन्ध प्रेषण का प्रकार - निबन्ध स्वच्छ एवं शुद्ध हस्तलिखित अथवा टाईप किया हुआ हो।

परिणामघोषणा -1 मार्च 2022 पुरस्कारवितरण – 5 मार्च 2022

नियम-

- निबन्ध पर अपना नाम, पता अथवा कोई संकेत न लिखें। अपने निबन्ध के साथ एक पृष्ठ पर अपना नाम, पितृनाम, मातृनाम, कक्षा, जन्मतिथि, गुरुकुल, दूरभाष, ई.मेल, पत्राचार-संकेत तथा स्वछायाचित्र देना आवश्यक है।
- आपका निबन्ध ईमेल-manavsevapratisthan@rediffmail.com अथवा डाक द्वारा - मानव सेवा प्रतिष्ठान, 119 गौतम नगर, नई दिल्ली-49 पर स्वीकार किया जायेगा।
- हस्तलिखित निबन्ध स्कैन करके ही प्रेषित करें। यदि निबन्ध टाईप किया गया है तो वह Word File में ही हो। Word File के साथ—साथ .PDF फाईल तथा फॉण्ट (Font) प्रेषित करना आवश्यक होगा।
- नियमों के विरुद्ध यदि निबन्ध प्रेषित किया जाता है तो प्रतिस्पर्धा के लिए निबन्ध स्वीकार्य नहीं होगा। सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये जायेंगे।
- निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

संयोजक

चन्द्रदेव शास्त्री, प्रधान, 9868365727
डॉ. कँवर सिंह शास्त्री, महामन्त्री, 9873222614
रामपाल शास्त्री, कार्यकर्ता प्रधान, 9810283782

मानव सेवा प्रतिष्ठान

60 बी, हुमायूँपुर, नई दिल्ली-110029

वेद प्रचार आन्दोलन की जरूरत है

– डॉ. महेश विद्यालंकार

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। ऐसा अद्वितीय उद्घोष ऋषिवर से पूर्व किसी ने नहीं किया। वर्तमान में भी इतने शंकराचार्य, पंथ, सम्प्रदाय, गुरु, महन्त आदि हैं कोई भी वेदों के प्रति ऐसी मौलिक व प्रेरक मान्यता एवं धारणा नहीं रखता है। ऋषि दयानन्द ऐसे अकेले महापुरुष हैं, जिन्होंने संसार को सन्देश दिया **''वेदों की ओर लौटो, मेरी नहीं वेदों की मानो।** वेदज्ञान प्रभु का अमर सन्देश, उपदेश और आदेश है। वेद सबके, सबके लिए और सबको पढ़ने-सुनने का अधिकार है। इसी अनूठी पहचान के कारण उन्हें वेदोद्धारक और वेदों वाला कहा जाता है। वेद ज्ञान ही आज के भूले-भटके, अशांति, संघर्ष, हिंसा, भ्रष्टाचार, अनाचार आदि में लिप्त मानव समाज को सच्चे सुख शान्ति, संतोष, प्रसन्नता नीरोगता और मानवता का मार्ग दिखा सकता है। आज के जीवन जगत् को वेदों द्वारा दर्शित जीवन दर्शन की तत्काल आवश्यकता है –

आर्य समाज ऋषि का जीवित जागृत स्मारक और उत्तराधिकारी है। स्वामी जी के स्वप्नों तथा अधूरे कार्यों की पूर्ति की जिम्मेदारी आर्य संगठनों, संस्थाओं एवं आर्य समाज की है। ऋषि का स्वप्न व दूरदृष्टि थी। देश-देशान्तरों में सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार हो, और लोगों का जीवन जगत् वेदानुकूल बने। इसके लिए ऋषि ने अपना संपूर्ण जीवन आहुत कर दिया, उन्होंने वेद प्रचार आर्य समाज को विरासत और वसीयत में दिया है, आर्यों! ऋषि का सन्देश गूंज रहा है वेद-वेद-वेद वेदों का प्रचार करो, वेद ज्ञान घर-घर और जन-जन तक पहुँचाओ। वेदानुकूल जीवन बनाओ और जीओ। स्वामी जी की सोच व मान्यता थी – संसार में जितना वेदों की विचारधारा का प्रचार-प्रसार होगा, उतना दुनिया से अज्ञान, नास्तिकता, पाप, अत्याचार, अधर्म आदि कम होंगे। वेद का चिन्तन जगत् को सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखाता है। वेदज्ञान भारत की महत्त्वपूर्ण तथा आकर्षक विशेषता है।

आज आर्य समाज अपने मूल उद्देश्यों, आदर्शों, विचारों, मान्यताओं, सिद्धान्तों आदि से हट, कट और भटक रहा है। मूल में भूल बढ़ रही है। जो हमारी आरम्भिक काल में साख विश्वसनीयता, पहचान, सम्मान और आकर्षण था, उसमें तेजी से गिरावट बढ़ रही है। यह आर्य समाज के लिए विचारणीय और पीड़ा दायक चिन्ता है। इसके लिए तत्काल व्यापक स्तर पर चिन्तन व रक्षात्मक कदम उठाने की जरूरत है, नहीं तो ..... आज किसी को वेद प्रचार की पीड़ा, चिन्ता, बेचैनी एवं परेशानी नहीं हो रही है? हमारे अनुयायी घट रहे हैं? हमारे दैनिक, साप्ताहिक और वार्षिक उत्सवों की उपस्थिति निरन्तर कम होती जा रही है। उत्सवों पर लोगों को लंगर का प्रलोभन दिखाकर लंगर भीड़ जुटाई जा रही है, तेजी से पुराने विद्वान, वक्ता तथा कार्यकर्ता जा रहे हैं। नये विद्वान और सेवाभावी ईमानदार कार्यकर्ता नही मिल पा रहे हैं? कहीं बनाने की सोच, योजना, ट्रेनिंग सेन्टर, कार्य योजना और भावना भी नजर नहीं आ रही है। पहले भवन कच्चे होते थे लोग आचार-विचार, सिद्धान्तों से पक्के होते थे। आज आर्य समाज के पास भवनों, स्कूलों, संस्थाओं, संगठनों आदि की भौतिक सम्पदा अरबों में है। आन्तरिक दृष्टि से अध्यात्म, स्वाध्याय, सत्संग, यज्ञ, संध्या सिद्धान्तों, विचारों व आदर्शों आदि से कमजोर ही रहा है। आज आर्य समाज संकट के दौर से गुजर रहा है। आन्तरिक स्थिति बड़ी गम्भीर, बीमार तथा उखाड़-पछाड़ भरी है। सर्वत्र गुटबाजी, धड़ेबाजी व पार्टीबाजी हावी हो रही है न कोई किसी की सुनता है और न मानता है? धर्म से धड़ा भारी हो रहा है। जो आर्य समाज का प्रजातान्त्रिक ढांचा था वह लड़खड़ा और विकृत हो रहा है? परिणाम सामने है। आज पदों को पाने के लिए और पदों पर बने रहने के लिए नियम, नहीं रास्ते खोजे जा रहे हैं। यह हमारे नैतिक पतन का प्रमाण है।

कुछ अधार्मिक स्वार्थी पदलोलुप लोग आर्य समाज के प्रजातांत्रिक प्रणाली का लाभ उठाकर सभा संगठनों संस्थाओं और समाजों पर कब्जे किए बैठे हैं और कब्जे कर रहे हैं? जिनका न जीवन है और न कोई समाज संगठन व संस्थाओं के लिए योगदान रहा है? जिन्होंने ऋषि को न पढ़ा, समझा और न जाना है, जो अहंकार, स्वार्थ पद प्रतिष्ठा और लाभ के लिए पदों से अपने कदों को ऊँचा कर रहे हैं। पदों से अलग करके देखो तो ऐसे व्यक्तियों का तत्वदृष्टि से कोई महत्त्व व उपयोग नहीं है? ऐसे व्यक्तियों के नजदीक जाने पर घृणा होने लगती है। जो आर्य समाज कभी दूसरों की शुद्धि करता था आज उसे सच्चाई व ईमानदारी से अपनी शुद्धि की जरूरत है। आर्य समाज की भ्रष्ट राजनीति ऋषि के मिशन को खोखला, जर्जरित और बदसूरत बना रही है। भावनाशील, ऋषिभक्त व आर्य विचारधारा प्रेमी अन्दर से दुःखी व बेचैन हैं, उनकी न कोई सुनता है और न मानता है।

वेद प्रचार जनता से जुड़ने, उन्हें विचारने और सन्मार्ग दिखाने का उत्तम मार्ग है। आर्य समाज की सबसे बड़ी और भौतिक सम्पदा वैचारिक चिन्तन है। आज भी प्रत्येक दृष्टि से आर्य समाज सर्वोत्तम विचारधारा का धनी है। जो इसके पास ज्ञान, बुद्धि, तर्कयुक्त विचार है वैसे अन्यत्र दुलर्भ हैं। आज संसार सुविचारों के अभाव में जीवन जगत को नरक बनाकर जी रहा है।

हम आर्य समाजी बनेंगे तभी सर्वश्रेष्ठ बनेंगे

– दीपक कुमार छिल्लर

हम सभी में वैदिक संस्कारों को संजोकर रखती,
प्रत्येक आर्यजन के मन–मन्दिर में जगती।
वह लौ अब फिर से जलानी होगी,
घर–घर जाकर यह बात समझानी होगी।
महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित वेदों की वाणी को सुनेंगे,
हम आर्य समाजी बनेंगे तभी सर्वश्रेष्ठ बनेंगे।
सामाजिक अंधकारों को महर्षि दयानन्द जी ने दूर किया,
पाखण्डियों को पाखण्ड छोड़ने के लिए मजबूर किया।
आज के इस दौर में हर बात सच्ची लगती है,
वैदिक शिक्षाओं पर चलना यह बात अच्छी लगती है।
आप भी आर्य समाज को समझें व मानें,
सामाजिक बुराईयों का है हल आप इसे पहचानें।
सुन लो मेरे प्रियजन अनुज, सुन लो मेरे प्रियजन ज्येष्ठ।
हम आर्य समाजी बनेंगे तभी सर्वश्रेष्ठ बनेंगे।।1।।
हम सभी आयें, आगे आयें, लोगों को जगायें,
महर्षि दयानन्द जी की जीवन गाथा जन–जन तक पहुंचायें।
बढ़ेंगे गुरुकुल तो बढ़ेगी गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली,
अपनाएं वैदिक नियमों को नहीं तो रह जायेंगे हाथ खाली।
उठ रही है आज घर–घर में यह आवाज,
समाज को संस्कारित कर रहा है हमारा आर्य समाज।
छल, कपट, बैर–भाव, सद्भावना से भरपूर किया,
समाज में फैली सामाजिक कुरीतियों का घोर विरोध किया।
वैदिक संस्कारों को अपनाने का सभी से अनुरोध किया,
निर्भीक बनें, निडर बनें, बनें एकदम नेक।
विकल्पों को मत खोजो, विकल्प है केवल एक,
वैदिक संस्कृति को संजोते हुए वैदिक शिक्षाओं का पालन करेंगे।
सादगी से भरे जीवन का प्रण हम सदैव ही भरेंगे,
युवाओं का प्रेरणा स्रोत बनकर दे रहा है मधुर आवाज।
अमर रहें हमारे महापुरुष, अमर रहें हमारा आर्य समाज।
हम आर्य समाजी बनेंगे तभी सर्वश्रेष्ठ बनेंगे।।2।।

– म. नं.–1022, ग्राम सभा कालोनी,
सरदार पटेल झील के पास, पूठकलां, दिल्ली–86

आर्य समाज का मुख्य कार्य व्यक्ति, चरित्र, परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण है। हम जनता से कट रहे हैं। प्रेरक सात्विक यज्ञ, वेद कथा, भक्तिपूर्ण आध्यात्मिक संगीत, योग, दैनिक साप्ताहिक, प्रेरक सत्संग औरसमय-समय पर जीवन निर्माण, जीवन सुधार के शिविरों का आयोजन करना, सद्साहित्य, दैनिक पत्र-पत्रिकाएं, रेडियो टेलीविजन, धार्मिक चैनलों के द्वारा आर्य समाज आम जनता तक पहुँच सकता है। दुर्भाग्य है कि आर्य समाज आज तक अपना चैनल नहीं बना सका जब कि महासम्मेलनों पर हम करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं? इतने में तो उपदेशक विद्यालय चल सकते हैं? जो कि रचनात्मक और स्थाई कार्य है। हमारी प्रवृत्ति तेजी से जलसा, जलूस, फोटो माला, स्वागत, लंगर, प्रशंसा आदि की ओर बढ़ रही है। मुख्य समय इन्हीं बातों में निकल जाता है। जो भावनाशील, तटस्थ, धर्म जिज्ञासु और प्रेरक चिन्तन के इच्छुक होते हैं वे ऐसे आडम्बरपूर्ण वातावरण से हटने और कटने लगते हैं। हमारे कार्यक्रमों में बड़ी तेजी से कमजोरी आ रही है, कि जो यज्ञ, सत्संग, उत्सव, प्रवचन, सम्मेलन आदि में सात्विकता, धार्मिकता, स्वच्छता, शांति और प्रेरक प्रभाव होना चाहिए, उसका अधिकांश स्थानों पर अभाव नजर आता है। हमें दूसरों से सीखना चाहिए। संध्या और यज्ञ में हमारी रुचि, प्रवृत्ति व आस्था घट रही है ये हमारे अध्यात्म व धार्मिक जीवन के आधार हैं। सन्ध्या स्वाध्याय सत्संग आदि हमारे जीवन को व्यवस्थित व सन्तुलित बनाए रखते हैं। इनसे भाव शुद्धि बनी रहती है।

सच ये है कि आर्य समाज का मुख्य एजेण्डा वेद प्रचार है। इसमें सब कुछ आ जाता है। पौराणिकों ने रामचरित मानस और हनुमान चालीसा को घर-घर पहुंचा दिया। सभी निरन्तर सुनते व पाठ करते हैं। ऐसा आर्य समाज वेदों के प्रति श्रद्धा, विश्वास व निष्ठा जाग्रत नहीं कर पाया।'' वेद की ज्योति जलती रहे'' नारे से काम नहीं चलेगा। पौराणिक परम्परा में आज भी सस्वर वेदपाठी तैयार किए जा रहे हैं, वैदिक परम्परा में अभाव ही रहा है। आज हम देश, काल, समय के अनुसार विद्वानों, पुरोहितों, भजनोपदेशकों, प्रचारकों, संन्यासियों आदि को तैयार नहीं कर पा रहे हैं। आर्य समाज के पास युवकों को जोड़ने वाली कोई प्रेरक, रचनात्मक संस्थाएँ नहीं हैं जो समयानुसार युवकों को अपनी ओर आकर्षित कर सकें। आज की युवा पीढ़ी भटकन में है वह सत्य और शान्ति चाहती है। वह ढोंग-पाखण्ड, आडम्बर, गुरु महन्तों आदि से तंग आ गई है। आर्य समाज के पास ऊर्जा, ज्ञान शान्ति और प्रेरक जीवन दर्शन है, किन्तु, परन्तु, लेकिन ..... हमें कहना आता है, करना नहीं आता। युवा पीढ़ी भाषण नहीं आचरण देखती है। आर्य समाज को समयानुसार, आधुनिक संदर्भों में गंभीरता से रचनात्मक, निर्माणात्मक एवं क्रियात्मक कदम उठाने होंगे। नये और पुराने का संतुलन बनाना होगा। व्यक्ति निर्माण पर विशेष बल देना होगा। आज भवन व संस्थाएं बन रहे हैं, व्यक्ति नहीं बन पा रहे हैं। व्यक्ति, विचार और सिद्धान्तों से संस्थाएं चलती हैं।

आर्यों! उठो, जागो अपने को संभालो! कहां के लिए चले? कहां जा रहे हैं? आपस में मिलो, बैठो! सोचो! विवादों और अहंकार को छोड़ो। संसार हमारी ओर देख रहा है और हम व्यर्थ की बातों, उलझनों और झगड़ों में कीमती समय पैसा, शक्ति, सोच आदि गंवा रहे हैं। हृदय की धड़कनों पर हाथ रखकर सोचो। ऋषि और आर्य समाज के लिए ईमानदारी से क्या कर रहे हैं। चिन्ता नहीं चिन्तन करो, यही वेद प्रचार है।

मादक पदार्थों के सेवन की बढ़ती प्रवृत्ति

– डॉ. अखिलेश निगम

आज सम्पूर्ण विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के युवाओं में नशाखोरी की बढ़ती हुई प्रवृत्ति ने एक विकराल स्वरूप धारण कर लिया है। हमारे देश में नशाखोरी का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि लोग इसे फैशन समझ बैठे हैं। नशाखोरी से हमारे समाज का प्रत्येक वर्ग विशेष रूप से युवावर्ग अत्यधिक दिग्भ्रमित हो रहा है, इससे उसका शारीरक एवं मानसिक पतन हो रहा है तथा वह आर्थिक, चारित्रिक एवं बौद्धिक रूप से भी अन्धकार के दलदल में निरन्तर फंसता चला जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण भी भारतीय संस्कृति को उपेक्षित कर रहा है, नवयवुक मादक पदार्थों का सेवन कर अपने आपको अत्याधुनिक सिद्ध करने का प्रयास करते हैं; किन्तु इस कड़ी में वह यह भूल जाते हैं कि उनका जीवन अशांति, अन्धकार, निराशा, अपराध एवं असामाजिकता की ओर उन्मुख हो रहा है।

आज का युवावर्ग अपनी कुण्ठा, हताशा एवं शिक्षा में असफलता या एकाकीपन दूर करने के लिए भी मादक पदार्थों का धड़ल्ले से सेवन कर रहा है इसमें उनकी गलत संगति का भी बहुत बड़ा प्रभाव है। वास्तव में यह बहुत बड़ी विडम्बना है कि एक मित्र अपने मित्र को नशीले पदार्थों का सेवन करने की आदत डालकर सच्ची मित्रता का अहसास दिलाना चाहता है। प्रारम्भ में वह उत्सुकतावश या मित्रता के दबाव में किसी भी नशीले पदार्थ का सेवन करता है। धीरे–धीरे वह इसे मनोरंजन का साधन मानने की भूल कर बैठता है। जब नशीले पदार्थ का सेवन उसकी आदत में शुमार हो जाता है तो ऐसी स्थिति में यदि कोई सच्चा मित्र या उसका कोई शुभचिन्तक उसे सही मार्ग दिखाने का प्रयास करता है, तो वह नशे की आदत को सही सिद्ध करने के लिए झूठे तर्क बना लेता है।

नशीली वस्तुओं के सेवन में सर्वाधिक प्रभावित 14 से 35 वर्ष के लोग हैं। समाज का किशोर वर्ग भी इसकी चपेट में है। हमारे जीवन की 12–18 वर्ष की अवस्था जिसे हम किशोरावस्था कहते हैं, जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, संवेदनशील एवं भावी जीवन की आधारशिला निर्मित करने की अवस्था होती है। ढेर सारे दिवास्वप्नों के साथ विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक परिवर्तनों का सामना करते हुए एक किशोर अनेकानेक समस्याओं एवं जिम्मेदारियों के साथ साक्षात्कार करता है। स्वभाव से जिज्ञासु प्रवृत्ति का होने के कारण वह समाज में व्याप्त अच्छाइयों एवं बुराइयों दोनों के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित होता है। विभिन्न प्रकार के माध्यमों तथा टी.वी., पोस्टर एवं विभिन्न प्रकार के आकर्षक विज्ञापन आदि के द्वारा सर्वाधिक आकर्षण मादक पदार्थों के प्रति होता है, जिसे शौकिया तौर पर प्रारम्भ करके किशोर उसके आदी होते चले जाते हैं। भारत में शराब का सेवन करने वाले किशोरों की संख्या लगभग 10 प्रतिशत और शौकिया तौर पर लुक–छिप कर शराब पीने वालों की संख्या 25–27 प्रतिशत तक है।

भारत के विभिन्न शहरों के विश्वविद्यालयों, डिग्री एवं माध्यमिक कॉलेजों के छात्र–छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है। एक नवीनतम सर्वेक्षण में यह बात भी उभर कर सामने आई है कि सह शिक्षा वाले कॉलेजों में लड़कियों द्वारा भी मादक पदार्थों का सेवन करना प्रारम्भ कर दिया गया है। इसमें सम्पन्न घरानों के लड़कों एवं लड़कियों द्वारा एल्कोहल पेय का धड़ल्ले से सेवन किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण एवं अपने आप को आधुनिक सिद्ध करने की होड़ की प्रवृत्ति मुख्य रूप से उभर कर सामने आई है।

;qok oxZ esa eknd inkFkksZ ds lsou ds izeq[k dkj.k

युवा वर्ग में नशीले पदार्थों के सेवन के पीछे विभिन्न प्रकार के पारिवारिक, मानसिक, सामाजिक व अन्य कारण होते हैं, जो निम्नलिखित है।

- परिवार में किसी बड़े सदस्य द्वारा खुलेआम नशीले पदार्थों का सेवन करना।
- साथियों और मित्रों के दुष्प्रभाव व कुसंगति के कारण।
- संरक्षकों और माता–पिता के द्वारा अपने बच्चों को कम स्नेह और सुरक्षा देना अथवा उपेक्षित व्यवहार मिलना।
- परिवार में सदस्यों के बीच प्रेम की भावना का अभाव होना।
- माता–पिता की अतिव्यस्तता और बच्चों की समस्याओं से अनभिज्ञ होने के कारण।
- कुण्ठा, निराशा और थकान दूर करने के लिए।
- पढ़ाई में मन न लगना, बेरोजगारी तथा भविष्य व कैरियर के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण होना।
- घर से या सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह की भावना पनपना।
- आसपास के वातावरण में नशीली वस्तुओं की सहज उपलब्धि के कारण।
- जीवन में किसी भी प्रकार का खतरा व आनन्द लेने की इच्छा होना।

eknd inkFkksZ dk lsou djus okyksa ds y{k.k o igpku

- आँखों में लाली रहना, सूजन, सुस्ती और नींद की अधिकता।
- अकारण क्रोध, चिड़चिड़ापन व अत्यधिक तर्क–वितर्क करना।
- भूख कम लगना।
- उल्टियाँ होना, खांसी का दौरा पड़ना व शरीर में दर्द तथा हाथों में कंपन होना।
- पढ़ाई, खेलकूद या अन्य कार्यों में मन न लगना।
- जबान लड़खड़ाना और अस्पष्ट उच्चारण।
- मुँह से शराब व अन्य पदार्थों की महक आना तथा शरीर से विशेष प्रकार की दुर्गन्ध आना।
- बात कहकर भूल जाना, गुमराह करना और झूठ बोलना।
- पारिवारिक सदस्यों व पारिवारिक कार्यक्रमों में अरुचि पैदा होना।
- स्कूल व कक्षा से प्रायः अनुपस्थित रहना व शिक्षकों की इज्जत न करना।
- बाहों, कपड़ों व शरीर में जगह–जगह पर इंजेक्शन के निशान।
- घर से पैसा अथवा सामान का गायब होना।
- घर में एल्यूमीनियम फाइल, मोमबत्ती, माचिस मिलना या नये पैकेट मिलना।
- प्रायः असामाजिक कार्यों में संलिप्त रहना व अधिक खर्च करना।

u'khys inkFkksZ ds lsou ds nq"ifj.kke

- शराब के अत्यधिक सेवन से लीवर में सूजन, अल्सर, पीलिया, रक्तचाप, हृदय रोग एवं हार्ट अटैक की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है। मधुमेह के साथ–साथ पेट एवं आंत सम्बन्धी विभिन्न रोग उत्पन्न हो जाते हैं।
- अत्यधिक धूम्रपान एवं तम्बाकू सेवन से दमा, ब्रोंकाइटिस, मुँह, गले या फेफड़े का कैंसर, हाई ब्लड प्रेशर, दिल का दौरा पड़ना, अल्सर, भूख न लगना, गुर्दा रोग, मधुमेह एवं दांतों तथा मसूढ़ों की विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।
- यौन सम्बन्धी विकार नपुंसकता एवं किशोर बालिकाओं में भविष्य में बांझपन की सम्भावना बढ़ जाती है।
- मानसिक दुर्बलता, याददाश्त में कमी, अनावश्यक उत्तेजना एवं स्वभाव में चिड़चिड़ापन जैसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं।
- पारिवारिक कलह एवं अशांति का वातावरण उत्पन्न होना।
- नवयुवकों में नशे की लत के कारण चोरी एवं अपराध की दुष्प्रवृत्ति का विकास होना।
- नशे के कारण व्यक्ति में आत्महत्या की प्रवृत्ति भी बढ़ जाती है। वाहन दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण नशा ही है।

अतः उक्त विवेचना से स्पष्ट है कि हमें सुदृढ़ एवं उन्नत राष्ट्र के निर्माण हेतु देश के युवावर्ग को नशारूपी दानव से मुक्त रखना पड़ेगा, जिसमें राजनेता, अधिकारी, समाजसेवी, बुद्धिजीवी पत्रकार एवं साहित्यकारों का भी यह परम दायित्व है कि हम सभी मिलकर समवेत रूप से नशाखोरी के विरुद्ध शंखनाद करें तथा नशीली वस्तुओं के विरुद्ध सामूहिक जनजागरण अभियान चलायें ताकि हमारा समाज नशीली वस्तुओं के चंगुल से पूर्णतया मुक्त हो सके।

& vkse fuokl] 51 Dys LDok;j] dchj ekxZ]
y[kuÅ&226001 ¼m- iz-½

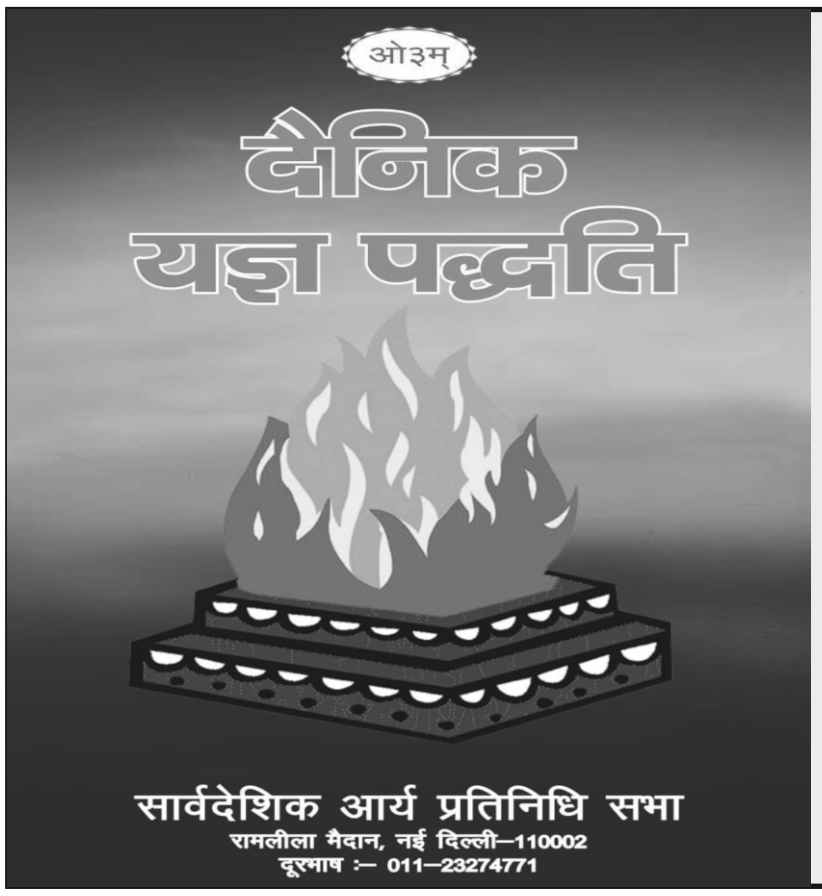

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाइटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

किसानों के रहनुमा दीन बन्धु चौधरी छोटूराम जी की प्रासंगिकता

में वह अपने बच्चों को पढ़ा–लिखा नहीं सकती। अतः उन्होंने 'किसान पुत्र छात्रवृत्ति' नाम से कोष स्थापित करके प्रतिभावान छात्रों को छात्रवृत्ति देनी प्रारम्भ की। इसी प्रकार उन्होंने विभिन्न स्थानों पर शिक्षण संस्थाएँ भी प्रारम्भ करवाई।

(4) किसान, मजदूर एवं गरीब जनता की भलाई के लिए जहाँ उन्होंने सरकार के माध्यम से अनेक क्रांतिकारी कानून बनवाये, वहीं उन्होंने भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड वेवल के समक्ष किसान के गेंहूँ के भाव की मजबूती से पैरवी की। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् पूरी दुनिया में अन्न की कमी हो गई थी और उसका प्रभाव बंगाल प्रान्त पर भी पड़ा था। बंगाल में भुखमरी से हजारों लोग तड़प–तड़प कर मर रहे थे। अंग्रेज सरकार की इससे किरकिरी हो रही थी। उस समय 2 जून, 1942 को लॉर्ड वेवल ने भारत के समस्त खाद्य मंत्रियों की एक बैठक नई दिल्ली में बुलाई। इस बैठक में पंजाब की ओर से चौ. छोटूराम जी सम्मिलित हुए। लार्ड वेवल ने जब सभी खाद्य मंत्रियों के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि पूरे विश्व में आये संकट के इस दौर में बंगाल प्रान्त में भुखमरी से पीड़ित जनता को सहायतार्थ हमें वहाँ अन्न भेजना है। अतः आप सभी गेंहूँ का कन्ट्रोल रेट 6 रुपये मन तय करके अधिक से अधिक गेंहूँ भिजवाने की व्यवस्था करें। बैठक में उपस्थित सभी खाद्य मंत्री चुप रहे किन्तु चौ. छोटूराम ने खड़े होकर जवाब दिया कि पंजाब को 6 रुपये मन का भाव स्वीकार नहीं है। इस पर वायसराय ने उनकी बात काटते हुए कहा कि जब और सब मौन सहमति दे रहे हैं तो आप इसका विरोध क्यों कर रहे हैं? चौ. साहब ने कहा कि इनके पास गेंहूँ है ही कहाँ, इनमें से बहुत सारे तो लेने वाले हैं। गेंहूँ तो सारा पंजाब देता है और जब तक किसानों के उपयोग में आने वाली अन्य चीजों के कंट्रोल रेट निश्चित नहीं कर दिये जाते तब तक वे 6 रुपये मन में गेंहूँ नहीं देंगे। वायसराय की त्योरी चढ़ गई और उसने गुस्से में आकर कहा कि इस समय हम किसानों की कोई मदद नहीं कर सकते और आप ये सब अनावश्यक बातें कर रहे हैं। चौ. छोटूराम ने फिर जवाब देते हुए स्पष्ट किया कि यदि आप किसानों की मदद नहीं कर सकते तो हम भी 10 रुपये मन से कम कीमत पर एक भी दाना गेंहूँ का पंजाब से नहीं आने देंगे। वायसराय बैठक छोड़कर चले गये और बाद में उसने पंजाब के गवर्नर और मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर यह पूछा कि आपकी सरकार का यह मंत्री कौन है जो बड़ा कठोर एवं रूखा जवाब देकर गया है। इसके व्यवहार से मैं बहुत दुःखी हुआ और मुझे संदेह है कि यह व्यक्ति पंजाब में अशांति फैला सकता है। इस पर पंजाब के गवर्नर ने वायसराय को जवाब देते हुए बताया कि चौ. छोटूराम एक प्रतिष्ठित, जिम्मेदार, समझदार एवं लोकप्रिय नेता हैं। पूरे पंजाब के किसान इनकी बातों का अनुसरण करते हैं और पंजाब की सरकार का सफल संचालन भी इनकी ही सूझ–बूझ से हो रहा है। अतः इनकी बातों को गम्भीरता से लिया जाना चाहिए। वायसराय लॉर्ड वेवल ने चौधरी साहब का लोहा मानते हुए 10 रुपये के बदले 11 रुपये मन का भाव निश्चित कर दिया। इससे उनके व्यक्तित्व की मजबूती, आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान का परिचय मिलता है।

चौधरी साहब ने अपने कार्यकाल में देश के 80 प्रतिशत किसान व मजदूरों के लिए जो कानून बनवाये और उन्हें आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने की मुहिम शुरू की। उसका अनुसरण करते हुए बाद में सरकारों ने अपनी दिशा निर्धारित की। देश की राजनीति एवं सामाजिक व्यवस्था में किसानों एवं गरीबों की भागीदारी एवं भूमिका को निश्चित करने के लिए चौधरी छोटूराम सदा याद किये जायेंगे। वर्तमान समय में उनके द्वारा किये गये सभी कार्य और उनकी सोच उतनी ही प्रासंगिक है जितनी तब थी। आज किसानों को अपने लाभकारी मूल्य एवं अन्य समस्याओं के समाधान के लिए आन्दोलन करना पड़ता है। यदि चौ. छोटूराम द्वारा शुरू किये गये किसान हितैषी कार्यक्रमों को क्रियान्वित किया जाये तो पूरा देश सुख–समृद्धि एवं शांति को प्राप्त कर सकता है। जब तक किसान खुशहाल नहीं होगा, आर्थिक शोषण से मुक्त नहीं होगा, सामाजिक रूप से जागरूक नहीं होगा तब तक देश आगे नहीं बढ़ सकता।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड,
नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य 4100/– रु. में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।